REFLECTIONS

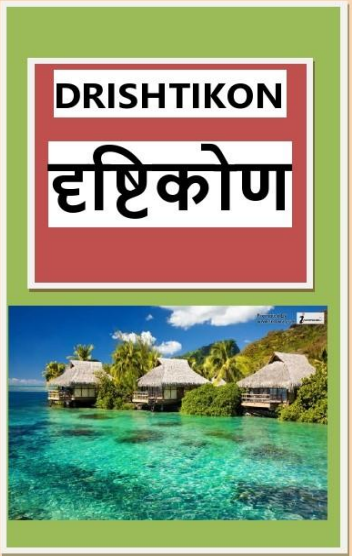

By

Dr. Ram Lakhan Prasad

These are the reflections on various aspects of life and living that were experienced and gathered by the author over the last fifty years in various countries, situations and circumstances. Some are very personal but many are general observation worth taking note for peaceful living and healthy life style.

मेरे विचारों का संग्रह

मेरी बन्दना

मेरे दर्पण का अर्पण

दो शब्द

इस संग्रह में मैं ने अपने निजी विचारों को प्रस्तुत किया है | मेरे विचारधारा में परिवार, भक्ति, ज्ञान ध्यान, समाज, धर्म, कर्म और सामान्य विषयों पर चर्चा की गयी है | यह सब मेरे अपने लेख हैं और किसी को इन से सहमति या कोई विरोध दर्शाने की कोई जरुरत नहीं है |

जैसे मुझ को इन विचारों को प्रस्तुत करने का अधिकार है वैसे ही मेरे पाठकगण को भी मेरे विचारों से असहमति होना स्वाभाविक है | इसलिए न हम किसी के विचारों का खंडन करते हैं और न ही यह चाहते हैं की हमारे विचारों पर कोई टीका टिप्पणी करे | मैं अपने विचारों पर अटल रहूँगा और मेरे पाठकगण अपने विचार ले कर चलते रहे तो हम को उस से कोई आपत्ति नहीं होगी |

हाँ अगर पाठकगण चाहें तो अपने विचारों को अलग प्रकाशित कर के अपने दिल की मुराद को पूरा कर सकते हैं | धर्म और राजनीती के विषय पर कभी भी एक विचार नहीं हुए हैं और न ही कभी होंगे क्यूंकि इस विषय पर सभी लोग अपने आपको सही मानते हैं | तो मैं क्यों न अपने विचारों को मन्येता दूँ | आप अपने जगह पर अड़े रहे और मुझको मेरे रास्ते पर चलने दीजिये |

बस हम और आप प्रेममई जीवन बिता सकते हैं |

गुरु बन्दना

सर्वप्रथम हम अपने सभी गुरु जानो को प्रणाम करते हैं | उन के ही विद्या दान से आज मैं इस धारणा याने अपने विचारधारा को अपने पाठकों के समक्ष पेश करने के काबिल हुए हैं | मेरी प्रारंभिक शिक्षा से ले कर उंच शिक्षण तक मेरे सभी गुरुजन बड़े निपुर्ण, उत्कृष्ट और योग्य व्यक्ति थे जिनके ज्ञान दान और योगदान से आज मेरा भाग्य उदय हो रहा है | मुझे मेरे सभी उस्तादों और गुरुजनो पर नाज़ और फक्र है | अगर वो न होते तो हम न जाने कहाँ होते |

मुझे मेरे सभी अध्यापकों और अध्यापिकाओं का नाम, काम और प्रदर्शन ठीक से याद हैं | उनके नाम हम स्वर्ण अक्षरों में लिखना चाहते हैं | लेकिन दुःख इस बात की है कि मेरे अधिकांश गुरुजनों का निधन हो गया है पर उनके उत्तम ज्ञान, गुण और शिक्षा दीक्षा को लेकर हम अपने जीवन को आगे बढ़|ने कि कोशिश कर रहें हैं |

उन सब के आशीर्वाद और कृपा से मेरा भविष्य उज्जवल होता जा रहा है | इस के लिए मैं अपने सभी गुरुजनों का आभारी हूँ और वे जहाँ भी हों मैं उनको अपना सादर सप्रेम प्रणाम भेज रहा हूँ |

गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णु,
गुरु देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात पारब्रह्माः
तस्मे श्री गुरुवे नमः

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पायेँ बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताये |

माँ की यही कहानी थी

स्वर्ग था मेरा नन्हा सा बचपन वो माँ की गोद सुहाती थी
देख देख कर अपने सब बच्चों को वो फूली नहीं समाती थी
ज़रा सी भी ठोकर लग जाती तो माँ दौड़ी दौड़ी आ जाती थी
ज़ख्मों पर जब दवा लगाती तो वो आंसू अपनी छुपाती थी
जब भी हम कोई ज़िद करते तो प्यार से हमें समझाती थी
जब जब बच्चे रूठे उससे मेरी माँ उन्हें प्यार से मनाती थी
खेल खेलते हम जब भी कोई तो वो भी बच्चा बन जाती थी
सवाल अगर कोई न आता हम को टीचर बन के पढ़ाती थी
क्लास में सब से आगे रहें हमेशा यही ही आस लगाती थी
हमारी तारीफ़ अगर कोई भी करता गर्व से वो इतराती थी
होते अगर ज़रा भी उदास हम दोस्त तुरन्त बन जाती थी
हँसते रोते बीता जो बचपन उसमे माँ ही तो बस साथी थी
माँ के मन को हम समझ न पाये यह हमारी नादानी थी
वो जीती थी हम बच्चों के खातिर माँ की यही कहानी थी
राम लखन आज जो भी है वो सब उस के माँ की दुवा है
माँ के सभी सेवाओं के ऋणी हैं हम जीवन सफल हुवा है |

मादरे वतन के लिए कुछ कर न सका था

मेरे पैदाइश के समय सारे दुनियां में दूसरा महा युद्ध हो रहा था
संसार में घमासान लड़ाई हो रहा था मैं ज्वाला ले कर आया था
बन्दूक गोले और टॉप के आवाज़ें गूँज रही थी और मैं रो रहा था
सैनिकों का सेना सभी गावं शहर और चौराहे पर तैनात खड़ा था
सभी ओर बड़ा हाहाकार मचा था जग में अँधियारा सा छाया था
धन्ये हैं मेरे माता पिता जिन्हों ने मेरा सही परवरिश किया था
लोग सब सह गए कुछ कह न सके मैं तो झलुआ में सो रहा था
न जलने का ग़म था न मरने का भय बस मैं बेफिकर रहता था
एसे महायुद्ध से क्या हानि और क्या लाभ है हमको नहीं पता था
जब होश हुवा तब हमने भी वही किया जो एक सैनिक करता था
जो कहा जाये बिना सवाल के वही करो मैं भी यही करने लगा था
हमारी लड़ाई दुनिया की महायुद्ध नहीं पर सियासत से संघर्ष था
शिक्षा पाकर शिक्षक बने देश समाज का खूब सेवा भी किया था
पर मुझको आज भी बहुत मयूषी है की मैं कुछ कर न सका था
मेरी परेशानी लोगों की गरीबी और देश में भ्रष्टाचारी का चलन था
अगर सत्ता मेरे हांथों में होता मैं भी उस आग को बुझा सकता था
पर एसा न कर पाता तो जनता का कुछ धीर तो बढ़ा सकता था
मधु की नदी बह रही थी मैं किसी को मधुरस पिला न सका था
बीत गया सब शुभ अवसर हमने जीवन भर पश्चाताप किया था
मरना तो होगा ही मुझको पर जब मरना था तो मर न सका था
मादरे वतन के लिए अपने उस जीवन में कुछ कर नहीं सका था
पश्चाताप के कड़ुए फल को चीख के आज तक मैं अतुला रहा था
इन बाइस पंक्तियों में जो मैंने लिखा वो मेरे आत्मा का पुकार था
अकेले मैं क्या करता जब संगठन जनता का मेरे साथ नहीं था |

मादरे वतन को याद करते हैं

बचपन में हम अपने मिंत्रों के साथ खेला करते थे
धरती गरम होती थी जब सूरज आग उगलते थे
पेड़ पालो सूख जाते थे पशु पंछी बेहाल हो जाते थे
नाले नदी सूख जाते थे और किसान हैरान होते थे
जायदाद जब मुरझा जाते तब लोग घबरा जाते थे
पुजारी आकाश को देख कर वर्षा की पूजा करते थे
आसमान लोगों की ये दशा देख के शांत हो जाते थे
पर्वत भी अपने ऊँचे शिखर से हँसते नज़र आते थे
रब यह सब देखते थे पर समय का इंतज़ार करते थे
उनके घर देर होते थे पर वे कोई अंधेर नहीं करते थे
जब ग्रीष्म आ जाते तब आकाश बादलों से घिरते थे
तेज हवाएँ चलने लगते काले बदल बरसने लगते थे
बिजली चमकने लगती थी गड़गड़ाहट होने लगते थे
जानवर उछलने लगते थे पंछी सब नाचने लगते थे
किसान खुशियों से झूम जाते पौधे भी खिल जाते थे
जब वर्षा के बूँदें पड़ने लगती हम भीगने निकलते थे
वर्सा ऋतू का नज़ारा होता था हम खूब मौज करते थे
मिटटी गीली होती थी और नदी नाले बहने लगते थे
पेड़ पौधों में जान आ जाती थी और वो खिल जाते थे
वारिश सड़कों और मकानो के सब धूल धो देते थे
वर्षा के वो मौसम सब के दिलों में उल्हास ला देते थे
बच्चे बूढ़े किसान मज़दूर सब मौज मनाने लगते थे
धनी लोग रंग विरंगे छतरी ले के बाहर निकलते थे
गरीब बस्ता के घोंघी की बरसाती पहन के चलते थे
हमारे लिए तो यह सब दृश्य बड़े मजेदार हो जाते थे
पेड़ों पे चिड़ियों की चहचहाहट जोरों से होने लगते थे
बत्तक और मुर्गियां खेतों के पानी में तैरने लगते थे
किसान अपने खेतों में ख़ुशी से घूमने फिरने लगते थे

घर की सब औरतें अपने खिड़कियों से झाँकने लगते थे
नर नारी बाल बच्चे और बृद्ध सब ख़ुशी से झूमने लगते थे
वारिश का आनंद ले कर सब लोग ख़ुशी मनाने लगते थे
वारिश रुकते ही पर्वतों पर सफ़ेद बदल उमड़ने लगते थे
पश्चिम के आकाश में तब इन्द्र धनुष दिखाई देने लगते थे
आज वो सब वारिश के नज़ारे हमको सपनों से लगते हैं
अपने गावं के उस प्राकृतिक दृश्य की तो हम दाद देते हैं
मेरा गावं और मेरा बचपन आज हमको बहुत याद आतें हैं
सखे सहेलियों के साथ हम आज भी मौज करना चाहते हैं
वो भी जिंदगी थी जब वारिश में भीग के हम जी बहलाते थे
काश आज भी हम उसी गावं के सुखी जीवन बिताते थे
वो चमन और वो जिंदगी को छोड़ के हम पश्चाताप करते हैं
राम लखन आज इस चमन से मादरे वतन को याद करते हैं |

राम लखन प्रसाद
अकेला

मेरे पिताजी

मेरे जीवन में मेरे माता-पिता का स्थान कोई नहीं ले सकता। वो हमारे पहले दोस्त, पहले अध्यापक और एकमात्र सच्चे संरक्षक थे | जहाँ मेरी मां अपने लाड़-प्यार से मेरे दुनिया की हर खुशियां देने की कोशिश करती थी वहीं मेरे पिता जी का अपने बच्चों में खुशियां बांटने का तरीका थोड़ा अलग होता था । वे हम को प्यार से कम, डांट से ज्यादा समझाते थे । लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं होता कि वह हम से प्यार नहीं करते थे । उनके गुस्से में स्नेह, दुलार और हमारे प्रति सहानुभूति का भाव छिपा होता था | वे डांट तो सबके सामने देते थे लेकिन प्यार वो बस अकेले में ही करना जानते थे । क्योंकि वह ना सिर्फ हम से प्यार करते थे बल्कि एक वट वृक्ष की भांति हम को और हमारे पूरे परिवार को अपनी छाया में रखकर संरक्षण भी प्रदान करते थे । मेरे पिता जी एसे थे |

बचपन में दोस्तों के सामने पिता डांटते तो जरूर थे लेकिन यह भी सच है कि वह डांट मेरे ही फायदे के लिए होती थी ।

दुनियां भले ही अनदेखा कर दें लेकिन सच यही है कि जीवन भर वे मेरी हर छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी बड़ी-बड़ी जरूरतें कुर्बान कर देते थे ।

वैसे तो किसी भी संतान के लिए अपने पिता के अनमोल ऋण को चुका पाना संभव नहीं है लेकिन मैं आज भी उनके गुणगान करता रहता हूँ तथा उनके प्यार, दुलार और डांट से जुड़ी अपनी भावनाओं को उन तक पहुँचाया करता हूँ । कभी कविता लिख कर कभी उनकी पूजा कर के और ज्यादा समय उनको याद कर के मैं उनके कुछ ऋणों को चुकाने की कोशिश कर रहा हूँ |

मेरे सभी संस्कारों के पाठशाला थे मेरे पिता जी | मेरे सभी आदतों, गुणों की कार्यशाला थे मेरे पिता श्री | इतना ही नहीं मुझे पूर्ण सुरक्षा देने वाला किला थे मेरे पिता जी और मेरे सभी मुश्किल में काम आने वाला हौसला थे मेरे पिता जी |

बड़े भाग्य शाली होते हैं वे बच्चे जिनको अपने माँ और पिता की छत्र छाया का सुख मिलता है! सुखी होते हैं वे लोग जो अपने बूढ़े माँ बाप का बोझ उठाते हैं और चहरे पर हमेशा एक कुदरती मुस्कान कायम रखते हैं! लेकिन मैं इतना भाग्यशाली नहीं रहा! मेरे पिता जी ने मुझे अपने कंधे पर बिठा के सारी दुनिया का वो दृश्य हम को दिखाया था जिनको देख सुन कर हमने अपने भविष्य का निर्माण किया था |

उन दिनों अध्यापन का कार्य ही एसा था कि हम को घर से दूर जाके समाज सेवा करनी पड़ती थी | इसी कारण हम अपने विवाह के बाद कुछ दिन अपने माँ बाप के साथ रह कर उनकी सेवा कर के समाज और वतन के सेवा करने निकल पड़े थे | इस के बाद भी हम हर छुट्टियों में अपने पूज्य माता पिता के साथ सपरिवार आजाया करते थे |

लेकिन शायद जिन्दगी में दो चार ही ऐसे चांस मुझे मिले होंगे जब पिता जी का सामना मेरे विवाहित जीवन के बाद हुआ होगा और मैंने उन्हें जी भर कर देखा होगा! मेरे घर के दूसरे मंजिल पर भगवान् राम लक्षमण, माँ जानकी और हनुमान जी की फोटो टंगी रहती थी और हर आने जाने वाले के सर को झुका देती थी ! मुझे इस दृश्य देख कर बड़ा नाज़ होता था क्यूंकि मेरे पिता श्री राम के पुजारी थे और अक्सर बड़ी मीठी आवाज में वे रामायण के चौपाई और दोहे गाया करते थे! शाम को वे बांसुरी बजाते थे और बांसुरी का मधुर स्वर नदी घाटियों में गूंजने लगता था |

वे एक सफल किसान थे जिन्हों ने हम को घुड़सवारी, जानवरों की रक्षा और फसलों को उगाना सिखाया था | आज भी मैं अपने पिता जी को चाहे वे कहीं भी हों अपना प्यार भरा चरण स्पर्श करता रहता हूँ जिससे ह्रदय में बड़ी शांति होती है |

मैंने अपने ७६ वर्ष के जीवन में यही जाना है यही समझा है की “पित्री देवो भवः, मत्री देवो भवः” इन दोनों के ऋण से हम

में से कोई भी उनके पालन पोषण और प्यार से कभी उरिन नहीं हो सकता है | मैं आज खुद ही चार शादी सुदा बच्चो का पिता हूँ और दस नाती पोतों का दादा बन चूका हूँ | माता पिता के ऋण को हम से ज्यादा कौन जानता होगा |

मेरे पिताजी तो २७ तारीख जून १९१८ में पैदा हुए थे लेकिन १२ तारीख अप्रैल १९८८ में, ७० साल के बाद उनका स्वर्गवास हो गया और वे भगवन को प्यारे हो गए | अब उनकी यादे केवल साथ है और कुछ और है तो उनका आशीर्वाद जिसके सहारे हमारे जीवन की नईया भली भांति पार लग रही है |

मुझे याद है अपने पापा की वो हल्की सी झलक, जब मुझे अपनी गोदी में उठा कर या कंधे पर बिठा कर वे मुझे गावं भर में घुमाया करते थे | बस अब मेरे पास उनकी यादें ही बची हैं | उन दिनों उनका प्यार से मेरे सर पर हाथ फेरना और कहना कि सदा चिरंजीउ रहो और फूलो फ्लो आज मेरे आत्मा को बहुत भाता है | मुझे आपकी बहुत याद आती है |

जब मुझसे कोई भी जीवन के सवाल नहीं बनते तो मेरे पिता मेरे सहारा बन कर खड़े हो जाते थे | जब मुझे बाजार से कुछ खरीदना होता था और मेरे पास उतना पैसा नहीं रहता था तो मेरे गृहस्थ जीवन में भी मेरे पिता जी मुझ को मदद किया करते थे | अपने जीते जी उन्हों ने मुझे किसी दुसरे का सहारा नहीं लेने दिया था | वही मेरे एक मात्र सहारा थे पर आज जब वो नहीं हैं तो बड़ा दुःख होता है |

अब हमको पूर्ण रूप से ज्ञांत हो गया है की किसी भी संतान के जीवन में उसके माता-पिता का स्थान कोई नहीं ले सकता है | वही मेरे जीवन में सबसे अनमोल व्यक्ति हैं | यह जो कविता हम ने उनके प्रति रची है वो मेरा थोड़ा सा प्यार दर्शाने का एक तरीका है जिस से मेरे मन को शांति मिलती है | मेरे पिता श्री की जय हो |

मेरे पिताजी तुम मुझे याद बहुत आते हो तुम कहाँ गये
तुम मेरे माँ को गले लगते थे पर मेरे पास भी सदा रहे
बचपन आप के गोदी में बीता कान्धे पे दुनियां को देखे
हर दिन हर पल आपने मेरे ख़ुशी और सुख को देखे रखे
आपने हम को प्यार दिया मेरे मन मंदिर के आपा खोले
मेरे पिताजी तुम मुझे याद बहुत आते हो तुम कहाँ गये

माँ ने जनम दिया पर आपने पालन पोषण के कार्य किये
शिक्षा दीक्षा का सब भार संभाला मुझे जिम्मेदार बना दिये
धरम करम का सब ज्ञान दिया जीवन की राह दिखाय दिये
कितने तकलीफ उठाये पर कोई रकम के चिंता नहीं किये
सारी दुनियां के खुशियों को लाकर मेरे क़दमों पर रख दिये
हमारे पिताजी तुम मुझे याद बहुत आते हो तुम कहाँ गये

मेरी सभी जरूरते पूरी की अपने पेट काट काट के सब सहे
आप के मन में जो भी भाव छुपे थे उन्हें किसी से नहीं कहे
मेरी सभी गलतियों को माफ़ किया मुझको आशीर्वाद दिये
अपने तो खाए रूखी सूखी हम को सदा उत्तम भोजन दिये
हम को प्यार किया जैसे वैसा प्यार हमें किसी ने नहीं दिये
हमारे पिताजी तुम मुझे याद बहुत आते हो तुम कहाँ गये
माँ को गले लगाते हो, कुछ पल मेरे भी पास रहो !
'पापा याद बहुत आते हो' कुछ ऐसा भी मुझे कहो !

मैनेँ भी मन मे जज़्बातोँ के तूफान समेटे हैँ,
ज़ाहिर नही किया, न सोचो पापा के दिल मेँ प्यार न हो!

थी मेरी ये ज़िम्मेदारी घर मे कोई मायूस न हो,
मैँ सारी तकलीफेँ झेलूँ और तुम सब महफूज़ रहो,
सारी खुशियाँ तुम्हेँ दे सकूँ, इस कोशिश मे लगा रहा,
मेरे बचपन मेँ थी जो कमियाँ, वो तुमको महसूस न हो!

हैँ समाज का नियम भी ऐसा पिता सदा गम्भीर रहे,
मन मे भाव छुपे हो लाखोँ, आँखो से न नीर बहे!
करे बात भी रुखी-सूखी, बोले बस बोल हिदायत के,
दिल मे प्यार है माँ जैसा ही, किंतु अलग तस्वीर रहे!

भूली नही मुझे हैँ अब तक, तुतलाती मीठी बोली,
पल-पल बढते हर पल मे, जो यादोँ की मिश्री घोली,
कन्धोँ पे वो बैठ के जलता रावण देख के खुश होना,
होली और दीवाली पर तुम बच्चोँ की अल्हड टोली!

माँ से हाथ-खर्च मांगना, मुझको देख सहम जाना,
और जो डाँटू ज़रा कभी, तो भाव नयन मे थम जाना,
बढते कदम लडकपन को कुछ मेरे मन की आशंका,
पर विश्वास तुम्हारा देख मन का दूर वहम जाना!

कॉलेज के अंतिम उत्सव मेँ मेरा शामिल न हो पाना,
ट्रेन हुई आँखो से ओझल, पर हाथ देर तक फहराना,
दूर गये तुम अब, तो इन यादोँ से दिल बहलाता हूँ,
तारीखेँ ही देखता हूँ बस, कब होगा अब घर आना!
अब के जब तुम घर आओगे, प्यार मेरा दिखलाऊंगा,
माँ की तरह ही ममतामयी हूँ, तुमको ये बतलाऊंगा,
आकर फिर तुम चले गये, बस बात वही दो-चार हुई,
पिता का पद कुछ ऐसा ही हैँ फिर खुद को समझाऊंगा!

मेरी माता जी

मेरी माँ बहुत प्यारी थी वो सब से न्यारी थी | वो रोज सुबह घर में सब से पहले उठ जाती थी | भगवान से लेकर घर के सभी लोगों का ध्यान धरती थी | वो मेरे आज आजी, मेरे पिताजी, काका काकी, फुवा और हम सब का भी ध्यान धरती थी | वो मेरे पिताजी की और मेरे सभी भाई बहनो की हर बातों और जरूरतों की परवाह भी करती थी | मैं तो कहता हूँ कि मेरी माँ हमारे घर आँगन कि लक्ष्मी थी | इसीलिए मैं भी अपने माँ को सदा अपने भगवान का दरजा दिया है |

मेरी माँ ने कभी कोई स्कूल का दरवाजा भी नहीं देखा था पर मैं उनको कभी अनपढ़ नहीं कहा था क्यूंकि वे हम सब को पढ़ने कि चाह और लगन लगाया था | समय पर स्कूल भेजना और स्कूल से वापसी पर हमारे खाना पीना, सोना नहाना तथा सभी स्कूली कार्यों को सही रूप से करने का प्रोसाहन और ध्यान रखना उनकी दिलचस्पी थी |

आज हम में जो भी ज्ञान और इल्लम है वो सब मेरे माँ की ही प्रोत्साहन और प्रचार का नतीजा है | मेरी माँ मेरी पहली गुरु थी |

मेरी माँ गावं के स्त्रियों के साथ हिल मिल कर अपना एक संस्था बनाया था जिसमे उनका योगदान बहुत बड़ा रहता था | इसीलिए गावं में उनका नाम अति मान और इज्जत से लिया जाता था | वो गरीबों की सेवा सत्कार भी करती थी और दान पुण्य में उनका एक प्यारा सा तथा अजीब सा व्योहार होता था | वो दान देने में कभी हिचकिचाती नहीं थी | वो किसी भिखारी को घर से बिना खाना पानी दिए वापस नहीं भेजती थी | उन दान पुण्य की आशीर्वाद शायद आज हम सब पर असर कर रही है |

मैं ने कई बार गलती की थी पर माँ ने हम को मेरे पिताजी के तरह पहले तो हमको हमारे गलतियों का एहसास दिलवाती थी फिर ऐसा समझती थी कि हम दुबारा उन गलतियों को भूल कर भी नहीं करते थे | जब भी मैं दुखी होता था तब मेरी माँ ही मेरे मुरझाय चहरे पर मुस्कराहट ला देती थी | इसीलिए मैं अपने माँ बाप को अपना सब से अच्छा दोस्त मानता आया हूँ | वो हमारे जीवन के प्रथम प्यार थे | उनके प्यार और ममतामय स्पर्श को पाकर मैं अपने सारे दुःख दर्द को भूल जाता था | मेरी माँ ममता की देवी थी |

मेरी माँ ने अपने पति देव की सेवा में कभी कोई कमी नहीं आने दिया था | घर आँगन में, खेतों खडिहानों में, गावं और समाज में उनके साथ साथ काम करती थी |

इसीलिए जो कुछ हमने अपने माँ बाप, आजा आजी के सत्संगत से सीखा था वो सदा माननीय थी | मेरी माँ इन सब अच्छी अच्छी बातों को हम को बताती थी, भजन भाव और कीर्तन सिखाती थी, लोरियाँ भी गाय करती थी जिससे हम को बहुत शांति मिलती थी | मेरी माँ मेरे लिए एक उत्तम आदर्श बन गयी थी |

मेरी माँ ने ही मुझे सत्यम, सुखम, सुंदरम का पाठ पढ़ाया था और अच्छे रास्ते पे चलने की सीख दी थी | वो मेरे बचपन से ही हम को समय का महत्व बताती थी | समय पर सोना, समय पर जागना, समय पर खाना, समय पर स्कूल जाना और समय पर अपना सभी कार्य को करना हमारा आदत बन गया था | यह उनका संगीत था और हमने इनको अपना गीत बना कर जीवन भर गाते चले आ रहे हैं | मेरी माँ ईश्वर की दिया हुवा एक बरदान थी और उनके आँचल के छाये में हम अपने आप को सदा सुरक्षित पाते थे |

बचपन बीता जवानी आई मेरी विवाह हो गयी लेकिन मेरे माँ का दुलार प्यार, शिक्षा दिक्षा और आदर भाव बढ़ता ही गया पर एक कर्मयोगी और समाजसेवक होने के कारण हम को अपने माँ बाप से अपने अठ्ठाइस (२८) वर्ष के उम्र में समाज सेवा करने उनसे जुदा हो कर सपत्नीक न चाहते हुए भी निकलना पड़ा | अपने खुद के बढ़ते परिवार की सेवा सुषुरता में अपने जननी और जन्मदाता से दूर होना पड़ा पर हम हर छुट्टी में सपरिवास सहित अपने उस पवित्र और पवन मात्र भूमि का स्पर्श करने जरूर पहुँच जाते थे |

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-Ebooks.net